Vol.: 15 (January – June 2019)

ISSN No. : 2277-4270
UGC List No. - 40768

आम्नायिकी

पञ्चदशोऽङ्कः, जनवरी-जून, २०१९
षाण्मासिकी अन्ताराष्ट्रिया मूल्याङ्कितशोधपत्रिका
(विश्वविद्यालयानुदानायोग-नईदिल्लीद्वारा अनुमोदिता)

प्रधानसम्पादकः
प्रोफेसरहरीश्वरदीक्षितः

सहसम्पादकाः
प्रोफेसरपतञ्जलिमिश्रः डॉ० उदयप्रतापभारती, डॉ० सरोजकुमारपाढी,
डॉ० पुष्पादीक्षितः, डॉ० रमाकान्तपाण्डेयः, प्रो० (डॉ.)देवेन्द्रनाथपाण्डेयः,
डॉ० राकेशकुमारमिश्रः, डॉ० आलोकप्रतापसिंहविसेनः

प्रकाशकः
प्रोफेसरहरीश्वरदीक्षितः
वेदविभागः
संस्कृतविद्याधर्मविज्ञानसङ्कायः
काशीहिन्दूविश्वविद्यालयः, वाराणसी-२२१००५

Vol.: 15 आम्नायिकी ISSN No. : 2277-4270
(January – June 2019) ĀMNĀYIKĪ UGC List No. - 40768

विषयानुक्रमणिका

क्रम:	विषय:	लेखका:	पृष्ठाङ्क:
१.	वाक्यपदीयस्य प्रतिपाद्यम्	प्रोफेसरकृष्णकान्तशर्मा	१-७
२.	मानवीयमूल्यबोधजनितसमस्यानां श्रौतयज्ञानुष्ठानेन समाधानम्	उत्तमपाहाड़ी	८-१३
३.	पिण्डपितृयज्ञ:	धनञ्जय कुमार पाण्डेय:	१४-१९
४.	समाजस्यहितं संस्कृते निहितम्	अन्नपूर्णा आचार्य:	२०-२१
५.	प्रातिशाख्यानुसारेण स्वरसंस्कारयोर्निर्धारणम्	सिकेन्द्रमणित्रिपाठी	२२-२५
६.	उत्तररामचरितम् में लोकनाट्य परम्परा का प्रभाव	डॉ0 (श्रीमती) मधु सत्यदेव	२६-३२
७.	भवभूति की कृतियों में वर्णव्यवस्था	डॉ0 शान्तिलाल सालवी	३३-४२
८.	आधुनिक रङ्गमंच की वैदिक पृष्ठभूमि	डॉ0 लक्ष्मी मिश्रा	४३-४८
९.	हिन्दी साहित्य में चित्रित किन्नर समाज : एक अध्ययन	डॉ0 प्रीति राय	४९-५४
१०.	संत साहित्य में स्त्री स्वर	डॉ0 गौरी त्रिपाठी	५५-६१
११.	कबीर की नैतिक चेतना की वैचारिकी	डॉ0 शिवशंकर यादव	६२-६५
१२.	असतो मा सदगमय : कुरान और उपनिषदों के सन्दर्भ में	डा0 वाहिद नसरु	६६-७४
१३.	महाकवि कालिदास के काव्यों में दार्शनिक दृष्टिकोण	पूनम राज	७५-७७
१४.	भारवि एवं माघ का राजनीतिक दृष्टिकोण- एक तुलनात्मक विमर्श	अर्पिता मिश्रा	७८-८४
१५.	प्रो0 हरिदत्त शर्मा प्रणीत त्रिपथगा नाट्य संग्रह में समसामयिक समस्याओं का विवेचन	डॉ0 किरन यादव	८५-९०
१६.	भोजपुरी लोकगीतों में स्त्री–वेदना	सरिता यादव	९१-९५
१७.	शृंखला की कड़ियाँ और स्त्री संदर्भ	डॉ० नमिता जैसल	९६-१००
१८.	शास्त्रीय दृष्टि में विवाह की अवस्था	डॉ० शैलेश कुमार पाण्डेय	१०१-१०४
१९.	माघकालीन शिक्षा व्यवस्था	डॉ० राजीव पाण्डेय	१०५-१०९
२०.	प्राचीन युद्ध शैली में ध्वज पताकाओं की प्रासंगिकता	अनुग्रह नारायण पाण्डेय	११०-११३
२१.	स्वातन्त्र्योत्तर महिला कवियों की संस्कृत कविताओ में छन्द-योजना	दान बहादुर यादव	११४-११९
२२.	चमत्कार-सिद्धान्त एवं उसका स्वतन्त्र प्रस्थानत्व	राकेश कुमार यादव	१२०-१२७
२३.	अग्निपुराण में आयुर्वेद व सैद्धान्तिक ज्योतिष का मानव जीवन पर प्रभाव	सुबाष पाण्डेय	१२८-१३४
२४.	मृदुला गर्ग की औपन्यासिक संवेदनादृष्टि	पूजा सोनकर	१३५-१४६
२५.	प्रेमचन्द्र के साहित्य में नारी विषयक दृष्टिकोण	दिव्या भारती	१४७-१५२
२६.	अग्निहोत्र : एक विमर्श (वर्तमान के सन्दर्भ में)	ज्योत्सना यादव	१५३-१५५

संत साहित्य में स्त्री स्वर

*डॉ0 गौरी त्रिपाठी**

मध्यकालीन समाज और साहित्य हर लिहाज से बड़े महत्वपूर्ण रहे हैं। इस समय जहाँ एक तरफ शासकों के आंतरिक संघर्ष थे विदेशी आक्रमण थे, अत्याचार के कारण सामान्यजन पीड़ित और त्रस्त थे वहीं दूसरी और हमारा समाज परम्पराओ अंधविश्वास एवं अपनी संकुचित जीवनशैली के कारण संघर्ष कर रहा था। ऐसे समय में स्त्री के अस्तित्व की बात करना या उसकी अस्मिता पर बात करना बड़े आश्चर्य की बात थी।स्त्री की अपनी कोई अलग पहचान नहीं थी सिवाय स्त्री शरीर के।

जिस प्रकार समाज में स्त्रियों को लेकर के परस्पर विरोधी विचारधाराएँ देखने को मिलती हैं मध्यकालीन कविता में भी लगभग वही दृश्य दिखाई पड़ता है। मध्यकालीन स्त्री के जीवन की सार्थकता अपने आप को पतिव्रता साबित करने की थी अपने जीवन के किसीदूसरे पक्ष के बारे में वह अगर सोचे तो उसे त्याग के उच्च सिंहासन से तत्काल उतार दिया जाता था मध्यकालीन हिन्दू और मुस्लिम समाज की स्त्रियाँ अपने जीवन के लिए अपने घरों के पुरुष वर्गों पर ही आश्रित थी लेकिन चारित्रिक शुचिता की अपेक्षा केवल स्त्रियों से लिखी जाती थी उच्च वर्ग और राजघरानों को छोड़ दिया जाए तो स्त्री शिक्षा की कोई विशेष व्यवस्था नहीं थी सती प्रथा बहुपत्नी प्रथा बाल विवाह पर्दा प्रथा दहेज प्रथा तथा सामंत वर्गों द्वारा स्त्री अपहरण वेश्यावृत्ति मीना बाजारों में उनकी खरीद-फरोख्त तत्कालीन स्त्री जीवन की विकृतियाँ थी स्त्री भोग्य रूप भोग्य रूप में ही पुरुषों को ज्यादा पसंद आती थी। अतः पूरा का पूरा मध्यकाल स्त्रियों के पक्ष में बिल्कुल खड़ा नहीं था अब हम मध्यकालीन कवियों की चर्चा करते हैं वह स्त्रियों को लेकर के कितने उदार रहे हैं। उनकी कविताओंमें स्त्रियाँ किस प्रकार आती है इसका भी अध्ययन बहुत जरूरी है यह बात तो एकदम तय है कि समाज की मानसिकता कवियों के ऊपर भी कुछ ना कुछ असर जरूर डालती हैं इस कड़ी में हम सबसे पहले कबीर दास की चर्चा करेंगे। कबीर सामाजिक सरोकारों के बहुत बड़े कवि हैं लेकिन स्त्रियों के मामले में बेहद संकीर्ण, स्त्रियों उनके यहा बहुत सहज और स्वाभावित रूप में नहीं नजर आती हैं। उन्होंने स्त्रियों को नरक का कुण्ड कहा है।

''नारी कुण्ड नरक का बिरला थम्भै बाग
कोई साधु जन उभरे सब जग मुवा लाग।[1]

यह भी आश्चर्य की बात है कि मध्य काल के पहले प्राचीन काल में स्त्रियों को ज्यादा सम्मान दिया गया यह एक विचार करने वाला प्रश्न है कभी-कभी होने के साथ-साथ साधन भी थे और उन पर गोरखनाथ की परंपराओं का भी स्पष्ट प्रभाव दिखाई पड़ता है गोरखनाथ ने आध्यात्मिकता की बहुत ऊँची ऊँचाइयों को

* असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग, डॉ0 शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास, विश्वविद्यालय, लखनऊ।